द्वीप पुर्तगालियों के अधिकार में आए, फिर डचों के और अंत में अंग्रेजो ने इन पर अपना अधिकार जमा लिया ।

विदेशियों के इन द्वीपों की ओर ध्यान केन्द्रित होने के साथ समय–समय पर उनका यहां के आदिवासियों के साथ सामना होता रहा । ऐसे में कई बार उनके बीच खूनी झड़पें भी हुईं । यहां के अण्डमान द्वीपसमूह में किसी उचित स्थान पर अपना उप निवेश स्थापित करने की सोच के तहत अंग्रेजों ने यहां के नीग्रेटो नस्ल के आदिवासियों के साथ मित्रता की नीति पर चलने का फैसला लेने के बावजूद उनकी ओर से उदासीनता और हिंसक रवैये के चलते लम्बे समय तक दोनों के बीच झड़पों का दौर जारी रहा पर अपेक्षाकृत शक्तिशाली और आधुनिक हथियारों से लैस विदेशियों के आगे ये टिक नहीं पाए और इनकी दुनिया अपने आप में और सिमटती चली गई और अंततः वह समय आया, जब विदेशियों से मैत्री की संभावनाओं को नकारते चले आ रहे यहां के आदिम जनजाति के कुछ कबीलों को अपनी धरती पर उनके कदमों के विस्तार के साथ अपने अस्तित्व पर खतरा दिखाई देने लगा । ऐसे में अपने शत्रुओं के प्रति नरम होते उनके पास मैत्री के सिवा और कोई चारा नहीं बचा था ।

अपनी ही धरती पर जबरन घुस आए विदेशियो की ओर अब वे मैत्री के भाव से जरूर देख रहे हैं । उनके मन में कही न कहीं अपने प्रति की गई ज्यादती का दर्द भी छिपा हुआ है । सही अर्थों में देखा जाए, तो परिस्थितिवश ही वे हमारी शरण में आने को मजबूर हुए हैं । उनकी दुनिया में विदेशियो की बढ़ती आबादी इसका मुख्य कारण कहा जा सकता है । इस वजह से उनके जंगल नष्ट होते गए, जहां उनकी सीमाएं संकुचित होती गई वहीं उनका क्रोध भी बढ़ता गया । ऐसे में विदेशियों से झड़पें होना लाजमी था पर ऐतिहासिक कारणों से बाहरी मानवों को भी अपने हितों के चलते यहां आना पड़ा था । समय के साथ विदेशियों की यहां